परिशिष्ट

बराहनगर-मठ

प्रथम परिच्छेद

(ठाकुर श्रीरामकृष्ण का प्रथम मठ— नरेन्द्रादि भक्तों का वैराग्य और साधन)

बराहनगर-मठ। ठाकुर श्रीरामकृष्ण के अदर्शन के पश्चात् नरेन्द्रादि एकत्र हुए हैं। सुरेन्द्र की साधु इच्छा से बराहनगर में उनके लिए रहने का एक वास-स्थान हुआ है। वही स्थान आज मठ में परिणत हो गया। ठाकुर-मन्दिर में गुरुदेव ठाकुर श्रीरामकृष्ण की नित्यसेवा है। नरेन्द्र आदि भक्तों ने कहा, अब संसार में नहीं लौटेंगे, 'उन्होंने जो कामिनी-काञ्चन-त्याग करने के लिए कहा है', हम किस प्रकार फिर घर लौटकर जाएँ! शशी ने नित्यपूजा का भार लिया है। नरेन्द्र भाइयों का परिचालन (तत्त्वावधान) कर रहे हैं। भाई भी उनका मुख देखते रहते हैं। नरेन्द्र ने कहा है, साधना करनी होगी, उसके बिना भगवान को नहीं पाया जाएगा। उन्होंने स्वयं और भाइयों ने नाना प्रकार के साधन आरम्भ कर दिए। मन का खेद मिटाने के लिए वेद, पुराण और तन्त्र-मत के अनेक प्रकार के साधनों में प्रवृत्त हो गए। कभी-कभी निर्जन में वृक्षतले, कभी-कभी एकाकी श्मशान के मध्य में, कभी-कभी गंगा-तीर पर साधन करते हैं। मठ के मध्य में या कभी-कभी ध्यान के कमरे में एकाकी जप-ध्यान में दिन यापन करते हैं। और फिर कभी भाइयों के संग में एकत्र मिलित होकर संकीर्त्तनानन्द में नृत्य करते रहते हैं। सब ही, विशेषत: नरेन्द्र, ईश्वर-लाभ जन्य व्याकुल हैं। कभी कहते हैं कि क्या प्रायोपवेशन

(मृत्युकामना से उपवास) करूँ? किस उपाय से उन्हें प्राप्त करूँ?

लाटु, तारक, बूढ़े गोपाल— इन लोगों के रहने का स्थान नहीं है। इनका नाम करके (इनके लिए) सुरेन्द्र ने प्रथम मठ बनाया। सुरेन्द्र ने कहा, ''भाई! तुम लोग इस स्थान पर ठाकुर की गद्दी लेकर रहोगे और हम सब बीच-बीच में यहाँ पर शान्ति पाने आएँगे।'' देखते-देखते कौमार-वैराग्यवान भक्तगण यातायात करते-करते फिर घरों को नहीं लौटे। नरेन्द्र, राखाल, निरंजन, बाबूराम, शरत्, शशी, काली रह गए। कुछ दिन परे सुबोध और प्रसन्न आ गए। योगीन और लाटु वृन्दावन में थे, एक वर्ष बाद आकर मिल गए। गंगाधर सर्वदा ही मठ में यातायात करते रहते। नरेन्द्र को बिना देखे वे रह ही नहीं सकते थे। उन्होंने 'जय शिव ॐकार' यह आरती-स्तव ला दिया। मठ के भाई लोग 'वाहे गुरुजी की फते' यह जय-जयकार-ध्वनि जो बीच-बीच में करते थे, वह भी गंगाधर ने सिखाई। तिब्बत से लौटने के पश्चात् वे मठ में रह गए थे। ठाकुर के और दो भक्त, हरि और तुलसी, नरेन्द्र तथा उनके भाइयों के सर्वदा दर्शन करने आते। कुछ दिन परे अन्त में वे लोग भी मठ में रह गए।

(नरेन्द्र की पूर्वकथा और श्रीरामकृष्ण का प्यार)

आज शुक्रवार है, 25 मार्च, 1887 ईसवी। मास्टर मठ के भाइयों का दर्शन करने आए हैं। देवेन्द्र भी आए हैं। मास्टर प्राय: दर्शन करने आते हैं और कभी-कभी ठहर जाते हैं। गत शनिवार को आकर शनि, रवि और सोम— तीन दिन थे। मठ के भाइयों का, विशेषत: नरेन्द्र का, अब तीव्र वैराग्य है। जभी वे उत्सुक होकर सर्वदा उन्हें देखने आते हैं।

रात्रि हो गई। आज रात को मास्टर रहेंगे।

सन्ध्या के पश्चात् शशी ने मधुर नाम करते-करते ठाकुर-मन्दिर में प्रकाश जलाया और धूना दिया। वही धूना लेकर जितने कमरों में जितनी छवियाँ हैं, प्रत्येक के निकट जाकर प्रणाम कर रहे हैं।

अब आरती हो रही है। शशी आरती कर रहे हैं। मठ के भाई, मास्टर और देवेन्द्र सब हाथ जोड़कर आरती देख रहे हैं और संग-संग आरती का स्तव गा रहे हैं— 'जय शिव ॐकार, 'जय शिव ॐकार,

ब्रह्मा-विष्णु-सदाशिव! हर हर हर महादेव!!'

नरेन्द्र और मास्टर दोनों जनें बातें कर रहे हैं। नरेन्द्र ठाकुर के पास जाने तक की अनेक पूर्वकथाएँ मास्टर से कह रहे हैं। नरेन्द्र की वयस् अब 24 वर्ष 2 मास होगी।

नरेन्द्र— पहले-पहले जब गया, तब एक दिन भाव में बोले, 'तू आ गया!' ('तुइ ऐसेछिस्'!)

''मैंने सोचा, 'कैसा आश्चर्य! ये जैसे मुझे बहुत दिनों से पहचानते हैं।' तब फिर बोले, 'तू क्या एक ज्योति देख पाता है?'

''मैंने कहा, 'जी हाँ।' सोने से पहले कपाल (मस्तक) के पास क्या जैसे एक विशेष ज्योति घूमती रहती है।''

मास्टर— अब भी देखते हो क्या?

नरेन्द्र— पहले खूब देखता था। यदुमल्लिक के आहार-गृह में (भोजन-गृह में) एक दिन मुझे स्पर्श करके मन ही मन क्या कहा, मैं बेहोश हो गया था। उसी नशे में मैं एक मास तक था!

''मेरा विवाह होगा, सुनकर माँ काली के पाँव पकड़कर रोए थे। रो-रोकर कहा था, 'माँ, वह सब घुमा दे (फेर दे)। नरेन्द्र जैसे डूबे ना!'

''जब पिताजी का स्वर्गवास हो गया, माँ-भाइयों को खाने को नहीं मिलता था, तब एक दिन अन्नदा गुह के संग जाकर उनके दर्शन किए।

उन्होंने अन्नदा गुह से कहा, 'नरेन्द्र का बाप मर गया है, उन्हें बड़ा कष्ट है, अब बन्धु-बान्धवगण सहायता करें तो अच्छा है।

''अन्नदा गुह के चले जाने पर मैं उन पर नाराज हुआ। बोला, क्यों आपने उसको ये सब बातें कहीं? वे तिरस्कृत होकर रोने लगे और बोले, 'ओ रे, तेरे लिए तो मैं द्वार-द्वार पर भिक्षा माँग सकता हूँ।'

''उन्होंने प्यार करके हम लोगों को वशीभूत किया था।''

मास्टर— अणुमात्र भी सन्देह नहीं। उनका था अहेतुक प्यार।

नरेन्द्र— मुझे एक दिन अकेले में एक बात कही। और कोई नहीं था। यह

बात आप (हम लोगों के भीतर) और किसी से मत कहें।

मास्टर— ना, क्या कहा था?

नरेन्द्र— उन्होंने कहा, मैं तो सिद्धि नहीं कर सकता। तेरे भीतर से करूँगा, क्या कहता है? मैंने कहा— 'नहीं, वैसा नहीं होगा।'

''उनकी बातें उड़ा दिया करता— उनसे सुना है आपने। ईश्वर का रूप-दर्शन करते हैं, इस विषय में मैंने कहा था, 'वह सब मन की भूल है।'

''उन्होंने बताया, अरे, मैं कोठी के ऊपर चिल्लाया करता था— अरे, कहाँ हो कौन-कौन भक्त, आओ— तुम लोगों को बिना देखे मेरा प्राण जा रहा है! माँ ने कहा था, भक्त लोग आएँगे, यह देख सब मिल रहा है!

''मैं तब फिर क्या कहूँ, चुप किए रहा।''

(नरेन्द्र अखण्ड का घर— नरेन्द्र का अहंकार)

''एक दिन कमरे का दरवाजा बन्द करके देवेन्द्रबाबू और गिरीशबाबू को मेरे विषय में कहा था, 'उसका घर बता देने पर वह देह नहीं रखेगा'।''

मास्टर— हाँ, सुना है। और हमसे भी अनेक बार कहा था। काशीपुर में रहते हुए तुम्हारी एक बार वह अवस्था हुई थी ना?

नरेन्द्र— उसी अवस्था में बोध हुआ कि मेरा शरीर नहीं है, केवल मुख ही देखता हूँ। ठाकुर ऊपर के कमरे में थे। मेरी नीचे वही अवस्था हुई। मैं उसी अवस्था में रोने लगा। कहने लगा— मुझे क्या हुआ! बूढ़े गोपाल ने ऊपर जाकर ठाकुर को बताया, 'नरेन्द्र रो रहा है'।

''उनसे मिलने पर वे बोले, 'अब पता लग गया, चाबी मेरे पास है!'— मैंने कहा, 'मुझे क्या हुआ!'

''वे अन्य भक्तों की ओर देखकर बोले— वह अपने को जान सकने पर देह नहीं रखेगा, मैं भुलाए रखे हुए हूँ।

''एक दिन कहा था, तेरे मन में यदि है तो कृष्ण को हृदय में देख

सकता है। मैंने कहा, मैं कृष्ण-वृष्ण को नहीं मानता। *(मास्टर और नरेन्द्र का हास्य)*।

"और एक विशेष देखता हूँ, एक-एक जगह वस्तु या मनुष्य देखने से बोध होता है जैसे पहले जन्मों में देखे हैं— जैसे पहचाने-पहचाने हैं। अमहर्स्ट स्ट्रीट में जब शरत् के घर में गया, शरत् से एक बार कहा, यह घर तो जैसे सब मेरा जाना हुआ है। घर के भीतर के रास्ते, कमरे, जैसे बहुत दिनों के पहचाने-पहचाने हैं।

"मैं अपनी मर्जी से कार्य करता, वे (ठाकुर) कुछ नहीं कहते। मैं साधारण ब्राह्मसमाज का मैम्बर हुआ था, आप जानते तो हैं?"

मास्टर— हाँ, वह जानता हूँ।

नरेन्द्र— वे जानते थे, वहाँ पर लड़कियाँ भी जाती हैं। लड़कियों को सामने रखकर ध्यान नहीं किया जाता, जभी निन्दा करते। किन्तु हमें कुछ नहीं कहते। एक दिन केवल कहा, राखाल को ये बातें न बताइयो कि तू 'समाज' का मैम्बर बना है। फिर तो उसकी भी बनने की इच्छा होगी।

मास्टर— तुम्हारे मन का जोर अधिक है, तभी तुम्हें मना नहीं किया।

नरेन्द्र— अनेक दुःख-कष्ट पाकर तब यह अवस्था हुई है। मास्टर महाशय, आपने दुःख-कष्ट नहीं पाया; तभी मानता हूँ दुःख-कष्ट बिना पाए resignation (ईश्वर में समस्त समर्पण) नहीं होता— Absolute dependence on God.

"अच्छा! इतना नम्र और निरहंकार; कितनी विनय! मुझे बता सकते हैं, मुझमें कैसे विनय हो?"

मास्टर— उन्होंने कहा है, तुम्हारे अहंकार के सम्बन्ध में— यह 'अहम्' कार? ('अहं' किसका?)

नरेन्द्र— इसके क्या मायने हैं?

मास्टर— अर्थात् राधिका से एक सखी कहती है, तुझे अहंकार हो गया है— जभी कृष्ण का अपमान किया तूने! और एक सखी ने उसका उत्तर दिया था, हाँ, अहंकार श्रीमती का हुआ था सही, किन्तु यह 'अहं' किसका है? अर्थात् कृष्ण मेरा पति— यही अहंकार। कृष्ण ने ही यह अहं रख दिया है। ठाकुर

की बात के मायने यही हैं कि ईश्वर ने ही यह अहंकार तुम्हारे भीतर रख दिया है, अनेक काज करवा लेने के लिए!

नरेन्द्र— किन्तु मैं पुकार-पुकार कर कहता हूँ मुझे दुःख नहीं है।
मास्टर *(सहास्य)*— तो फिर शौक से पुकार करो। *(दोनों का हास्य)*

अब अन्य भक्तों की बातें चलीं— विजय गोस्वामी प्रभृति की।

नरेन्द्र— उन्होंने विजय गोस्वामी की बात बताई थी, 'द्वारे घा दिच्छे' (द्वार खटखटा रहा है)।

मास्टर— अर्थात् कमरे के भीतर अभी तक भी प्रवेश नहीं कर पाए हैं।

''किन्तु श्यामपुकुर के घर में विजय गोस्वामी ने ठाकुर से कहा था, 'मैंने आपका ढाका में इसी आकार में दर्शन किया है, इसी शरीर में।' तुम भी वहाँ पर उपस्थित थे।''

नरेन्द्र— देवेन्द्रबाबू, रामबाबू, ये सब संसार-त्याग करेंगे— खूब चेष्टा करते हैं। रामबाबू privately (अकेले में) कहते हैं, दो वर्ष पश्चात् त्याग करेंगे।

मास्टर— दो वर्ष पश्चात्? लड़के-लड़कियों का बन्दोबस्त होने पर शायद?

नरेन्द्र— और उस घर को भाड़े पर देगा। और एक छोटा घर खरीदेगा। लड़की का विवाह-शिवाह वे लोग (अन्य सम्बन्धी) देखेंगे।
मास्टर— गोपाल की सुन्दर अवस्था है ना?
नरेन्द्र— क्या अवस्था?
मास्टर— इतना भाव, हरि-नाम में अश्रु-रोमाञ्च!
नरेन्द्र— भाव होने से ही क्या बड़ा लोग हो गया!

''काली, शरत्, शशी, शारदा— ये गोपाल की अपेक्षा कितने बड़े व्यक्ति हैं! इनका त्याग कितना है! गोपाल उनको (ठाकुर श्रीरामकृष्ण को) कहाँ मानता है?

मास्टर— उन्होंने तो चाहे कहा भी है, वह यहाँ का व्यक्ति नहीं है। किन्तु ठाकुर की तो खूब भक्ति किया करते थे, देखा है।
नरेन्द्र— क्या देखा है?

मास्टर— जब प्रथम-प्रथम दक्षिणेश्वर गया, ठाकुर के कमरे में भक्तों का दरबार भंग हो जाने पर कमरे के बाहर आकर एक दिन देखा— गोपाल घुटने टेक कर बागान की लाल सुरखी वाले पथ पर हाथ जोड़े हैं— ठाकुर वहाँ पर खड़े हैं। चाँद का खूब प्रकाश है। ठाकुर के कमरे के ठीक उत्तर में जो बरामदा है उसके ही ठीक उत्तर के किनारे लाल सुरखी का मार्ग है। वहाँ पर और कोई नहीं था। बोध हुआ जैसे गोपाल शरणागत हुए हैं और ठाकुर आश्वासन दे रहे हैं।

नरेन्द्र— मैंने नहीं देखा।

मास्टर— और बीच-बीच में कहते 'उसकी परमहंस-अवस्था है।' किन्तु यह भी खूब अच्छे-से याद है— ठाकुर ने उनको स्त्री भक्तों के पास आना-जाना करने से मना किया था! अनेक बार सावधान किया था।

नरेन्द्र— और उन्होंने मुझसे कहा था— उसकी यदि परमहंस-अवस्था है तो फिर रुपया क्यों? और कहा था, 'वह यहाँ का व्यक्ति नहीं है। जो मेरे अपने व्यक्ति हैं वे यहाँ पर सर्वदा आएँगे।'

''तभी तो... बाबू के ऊपर वे नाराज होते थे। कारण, वे सर्वदा साथ रहते थे, और ठाकुर के पास अधिक नहीं आते थे।

''मुझसे कहा था, 'गोपाल सिद्ध— हठात् सिद्ध; वह यहाँ का आदमी नहीं। यदि अपना होता तो उसको देखने के लिए मैं रोया क्यों नहीं?'

''कोई-कोई उन्हें नित्यानन्द कह कर खड़ा कर रहे हैं। किन्तु उन्हीं ने (ठाकुर ने) कितनी बार कहा है— 'मैं ही अद्वैत-चैतन्य-नित्यानन्द, एक आधार में तीन'।''

द्वितीय परिच्छेद

(नरेन्द्र के प्रति लोकशिक्षा का आदेश)

मठ में काली तपस्वी के कमरे में दो भक्त बैठे हैं। एक त्यागी और एक गृही। दोनों की ही वयस् 24/25। दोनों ही बातें कर रहे हैं। इस समय मास्टर आ गए। वे मठ में तीन दिन रहेंगे।

आज गुडफ्राइडे, 8 अप्रैल, शुक्रवार। अब समय 8 का होगा। मास्टर ने आकर ठाकुर-मन्दिर में जाकर ठाकुर को प्रणाम किया। तत्पश्चात् नरेन्द्र, राखाल इत्यादि भक्तों के साथ मिलकर क्रमश: इस कमरे में आकर बैठ गए और उन्हीं दो भक्तों से सम्भाषण करके क्रमश: उनकी बातें सुनने लगे। गृही भक्त की इच्छा है संसार-त्याग करूँ। मठ के वे भाई उन्हें समझा रहे हैं, जिससे वे संसार-त्याग न करें।

त्यागी भक्त— कुछ कर्म जो हैं, उन्हें कर डालो ना! थोड़ा-सा कर लेने पर ही फिर शेष हो जाएगा।

''एक व्यक्ति ने सुना था, उसको नरक मिलेगा। उसने एक मित्र से कहा, नरक कैसा होता है जी? मित्र एक खड़िया लेकर नरक आँकने लगा। नरक ज्योंहि आँका गया, वह व्यक्ति उस पर लोट-पोट हो गया और बोला, अब मेरा नरक-भोग हो गया।''

गृही भक्त— मुझे संसार अच्छा नहीं लगता। आहा, तुम लोग कैसे हो!

त्यागी भक्त— तू इतना बकता क्यों है? यदि निकलना है तो निकल आ, नहीं तो क्यों एक बार शौक से भोग नहीं कर लेता?

नौ बजे के बाद ठाकुर-मन्दिर में शशी ने पूजा की।

प्राय: ग्यारह बज गए। मठ के भाई क्रमश: गंगास्नान करके आ गए। स्नान के पश्चात् शुद्ध वस्त्र धारण करके प्रत्येक ठाकुर-मन्दिर में जाकर ठाकुर को प्रणाम और तत्पश्चात् ध्यान करने लगे।

ठाकुर के भोग के पश्चात् मठ के भाइयों ने बैठकर प्रसाद पाया; मास्टर ने भी वही प्रसाद पाया।

सन्ध्या हो गई। धूना देने पर क्रमश: आरती हुई। दानवों के कमरे में राखाल, शशी, बूढ़े गोपाल और हरीश बैठे हैं। मास्टर भी हैं। राखाल ठाकुर के लिए खाना खूब सावधानी से रखने के लिए कह रहे हैं।

राखाल *(शशी आदि के प्रति)*— मैंने एक दिन इनके जलपान करने से पहले खा लिया था। वे देखकर बोले, 'तेरी ओर देख भी नहीं सकता हूँ। तू ने क्यों ऐसा कर्म किया!' मैं रोने लग पड़ा।

बूढ़े गोपाल— मैंने काशीपुर में उनके आहार के ऊपर जोर से निश्वास छोड़ दिया, तब वे बोले, 'यह खाना रहने दे।'

बरामदे के ऊपर मास्टर नरेन्द्र के साथ टहल रहे हैं और दोनों अनेक बातें कर रहे हैं।

नरेन्द्र बोले,
"मैं तो कुछ भी नहीं मानता था। जानते तो हैं?"

मास्टर—क्या, रूप-टूप?

नरेन्द्र— वे जो-जो कहते, पहले-पहल बहुत-सी बातें ही नहीं मानता था। एक दिन उन्होंने कहा था, 'तो फिर आता क्यों है?'

"मैंने कहा, आपको देखने आता हूँ, बातें सुनने के लिए नहीं।"

मास्टर— वे क्या बोले?

नरेन्द्र— वे खूब खुश हुए।

अगला दिन शनिवार, 9 अप्रैल, 1887! ठाकुर के भोग के पश्चात् मठ के भाइयों ने आहार किया और थोड़ा विश्राम भी किया। नरेन्द्र और मास्टर मठ के पश्चिम की तरफ जो बागान है, उसके एक वृक्षतले बैठकर निर्जन में बातें कर रहे हैं। नरेन्द्र ठाकुर के साथ साक्षात्कार के बाद जितनी भी, सब पूर्वकथा बता रहे हैं। नरेन्द्र की वयस् 24, मास्टर की 32 वर्ष।

मास्टर— प्रथम दर्शन का दिन तो तुम्हें खूब अच्छा याद है।

नरेन्द्र—वह दक्षिणेश्वर-कालीबाड़ी में— इनके ही कमरे में। उस दिन ये

दोनों ही गाने गाए थे—

मन चलो निज निकेतने।
संसार विदेशे, विदेशीर वेशे, भ्रम केनो अकारणे॥
विषय पञ्चक आर भूतगण, सब तोर पर केउ नय आपन।
परप्रेमे केनो होइये मगन; भूलिछो आपन जने॥
सत्यपथे मन करो आरोहण, प्रेमेर-आलो ज्वालि चल अनुक्षण।
संगेते सम्बल राख पुण्य धन, गोपने अति यतने॥
लोभ मोह आदि पथे दस्युगण पथिकेर कोरे सर्वस्व मोषण।
परम यतने राखो रे प्रहरी शम दम दुइ जने॥
साधु संग नामे आछे पान्थधाम, श्रान्त होले तथा करिओ विश्राम।
पथभ्रान्त होले सुधाइओ पथ से पान्थ-निवासीजने॥
यदि देखो पथे भयेरि आकार, प्राणपणे दिओ दोहाइ राजार।
से पथे राजार प्रबल प्रताप, शमन डरे जाँर शासने॥

[भावार्थ— हे मन, चलो अपने घर। संसार-विदेश में, विदेशी के वेश में क्यों अकारण घूम रहा है? पाँचों विषय (रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श) और सारे भूतगण (धरती, जल, अग्नि, वायु, आकाश) सब पराये हैं। तेरा अपना इनमें कोई नहीं है। पराये प्रेम में क्यों मगन हो रहा है और अपने जन को भूल रहा है। मन को सत्यपथ पर आरोहण करो, प्रेम का आलोक अनुक्षण जलाओ। गोपन में अति यत्न से संग में पुण्य धन को आश्रय में रखो। पथ में लोभ, मोह आदि चोर पथिक का सर्वस्व लूट लेते हैं। हे मन, परम यत्न से शम, दम दोनों को प्रहरी रखो। साधु-संग, नाम में पान्थ-धाम (धर्मशाला) है— श्रान्त (थकावट) होने पर वहाँ विश्राम करना। मार्ग भूलने पर वहाँ के पान्थ-निवासियों से रास्ता पूछना। यदि मार्ग में भय की मूर्ति देखो तो प्राणपण से राजा की दुहाई देना। उस पथ पर राजा का प्रबल प्रताप है, यमराज भी जिनके शासन में डरता है।]

गान— जाबे कि हे दिन आमार विफले चलिये।
आछि नाथ दिवानिशि आशापथ निरखिये॥
तुमि त्रिभुवन नाथ, आमि भिखारी अनाथ।
केमने बोलिबो तोमाय, एशो हे मम हृदये॥
हृदय-कुटीर-द्वार, खुले राखि अनिबार॥
कृपा करि एक बार एशे कि जुड़ाबे हिये॥

[भावार्थ— क्या मेरे दिन सब व्यर्थ ही चले जाएँगे? हे नाथ, मैं रात-दिन आशापथ को निरखता रहता हूँ। तुम त्रिभुवन के नाथ हो और मैं भिखारी, अनाथ हूँ। किस प्रकार आप

से कहूँ कि मेरे ह्रदय में आओ। अपने ह्रदय-कुटीर का द्वार हर समय खुला रखे हुए हूँ। कृपा करके एक बार आकर उसे शान्त करें।]

मास्टर— गाना सुनकर क्या बोले?

नरेन्द्र— उनको भाव हो गया था। रामबाबू आदि ने पूछा, 'यह लड़का कौन है? आहा, कैसा गाना!' मुझे फिर और आने के लिए कहा।

मास्टर— उसके बाद कहाँ मिले थे?

नरेन्द्र— तब फिर राजमोहन के घर में। उसके बाद फिर दक्षिणेश्वर में। उस बार मुझे देखकर भाव में मेरे लिए स्तव करने लगे। स्तव करके बोलने लगे, 'नारायण, तुम मेरे लिए देह धारण करके आए हो।'

"किन्तु ये बातें किसी से भी न कहिएगा।"

मास्टर— और क्या बोले?

नरेन्द्र— तुम मेरे लिए देह धारण करके आए हो। माँ से कहा था, 'माँ, मैं क्या जा सकता हूँ! जाकर किसके संग में बातें करूँगा? माँ, कामिनी-काञ्चन-त्यागी, शुद्ध भक्त पाए बिना कैसे पृथ्वी पर रहूँगा?' बोले, 'तूने रात को आकर मुझे उठाया, और मुझसे कहा 'मैं आया हूँ।' मैं किन्तु कुछ नहीं जानता, कलकत्ता के घर में उम्दा नींद ले रहा था।

मास्टर— अर्थात् तुम एक समय में present (उपस्थित) भी हो, तथा absent (अनुपस्थित) भी, जैसे ईश्वर साकार भी हैं, निराकार भी हैं!

नरेन्द्र— किन्तु यह बात किसी से मत कहें।

(नरेन्द्र के प्रति लोकशिक्षा का आदेश)

नरेन्द्र— किन्तु यह बात किसी से मत कहें। काशीपुर में उन्होंने मेरे भीतर शक्ति संचार कर दी थी।

मास्टर— जिस समय काशीपुर के बागान में वृक्षतले धूनि जला कर बैठते थे, तब?

नरेन्द्र— हाँ! काली से कहा, मेरा हाथ पकड़ तो। काली बोला, कैसा एक

shock (झटका) तुम्हारा शरीर पकड़ने से मेरे शरीर में लगा।

''यह बात (हमारे बीच है) किसी से भी न कहें, प्रोमिज करें (वचन दें)।''

मास्टर— तुम्हारे ऊपर शक्ति-संचार की, इसका विशेष उद्देश्य है, तुम्हारे द्वारा अनेक कार्य होंगे। एक दिन एक कागज पर लिखकर कहा था, 'नरेन शिक्षा दिबे' (नरेद्र शिक्षा देगा)।

नरेन्द्र— मैंने किन्तु कहा था, 'मैं वह सब नहीं कर सकूँगा।'

''वे बोले, 'तेरे हाड़ करेंगे'। शरत का भार मेरे ऊपर दे दिया। वह अब व्याकुल हो गया है। उसकी कुण्डलिनी जाग्रत हो गई है।''

मास्टर— अब पत्ता न जमे। ठाकुर कहते, शायद याद है, कि तालाब के भीतर मछली का गड्ढा होता है अर्थात् गर्त, जहाँ पर मछलियाँ आकर विश्राम करती हैं। जिस गड्ढे में पत्ते जम जाते हैं, उस गड्ढे में मछली आकर नहीं रहती।

(नरेन्द्र का अखण्ड का घर)

नरेन्द्र— मुझे नारायण कहा करते।

मास्टर— तुम्हें ''नारायण'' कहा करते— यह जानता हूँ।

नरेन्द्र— अपनी बीमारी के समय शौच का जल पहले देने नहीं देते थे।

''काशीपुर में कहा था— 'चाबी मेरे पास है, वह अपने को जान लेने पर देहत्याग कर देगा।'

मास्टर— जब तुम्हारी एक दिन वैसी अवस्था हुई थी ना?

नरेन्द्र— उस समय बोध हुआ था कि मेरा शरीर नहीं है, केवल मुख ही है। घर में कानून पढ़ रहा था, एग्जामिनेशन (परीक्षा) देने के लिए। तब हठात् मन में आया, क्या कर रहा हूँ!

मास्टर— ठाकुर तब काशीपुर में थे?

नरेन्द्र— हाँ। पागल की भाँति घर से निकल पड़ा। उन्होंने पूछा, 'तू क्या

चाहता है?' मैंने कहा, 'मैं समाधिस्थ हुए रहूँगा।' उन्होंने कहा, तू तो बड़ा हीनबुद्धि है! समाधि के परे जो! समाधि तो तुच्छ बात।

मास्टर— हाँ, वे कहते, ज्ञान के परे है विज्ञान— छत पर चढ़कर फिर सीढ़ियों से आना-जाना करना।

नरेन्द्र— काली ज्ञान-ज्ञान करता है। मैं उसे डाँटता हूँ, ज्ञान कैसे होगा? पहले भक्ति पक्की हो।

"और फिर तारकबाबू को दक्षिणेश्वर में बोले थे— भाव, भक्ति, कुछ भी शेष (अन्तिम) नहीं।"

मास्टर— तुम्हारे विषय में और क्या-क्या कहा है, बोलो!

नरेन्द्र— मेरी बात पर इतना विश्वास था कि जब मैंने कहा, 'आप रूप-टूप जो देखते हैं वे सब मन की भूल है', तब माँ के पास जाकर पूछा, 'माँ, नरेन्द्र ने ऐसी बातें कहीं हैं, तो फिर क्या यह सब भूल है'? तत्पश्चात् मुझसे कहा, 'माँ ने कहा है, वह सब सत्य है!'

"कहते, शायद याद है, 'तेरा गाना सुनकर (छाती पर हाथ रखकर दिखाकर) इसके भीतर जो हैं, वे साँप की न्यायीं फुँकार करके जैसे फण धारण करके, स्थिर होकर सुनते रहते हैं'।

"किन्तु मास्टर महाशय, इतना उन्होंने कहा, मेरा फिर क्या हुआ!"

मास्टर— अब शिव सजे हो, पैसा तो लेना ही नहीं। ठाकुर की गल्प तो याद है?

नरेन्द्र— क्या, बताइए ना, एक बार!

मास्टर— एक बहुरूपिया शिव बना था। जिनके घर गया था, वे एक रुपया देने आए थे, उसने नहीं लिया! घर जाकर हाथ धोकर आकर रुपया माँगा। घर वालों ने कहा, तब तो लिया नहीं? वह बोला, 'तब शिव बना हुआ था— संन्यासी— रुपया छूना भी जो नहीं।'

यह बात सुनकर नरेन्द्र अनेक क्षण तक खूब हँसते रहे।

मास्टर— अब तुम रोजा (ओझा, भूत-प्रेत झाड़ने वाला) सजे हो। तुम्हारे

ऊपर सब भार है। तुम मठ के भाइयों को मनुष्य बनाओगे।

नरेन्द्र— साधन-वाधन जो हम करते हैं, वह सब उनके कहने से किन्तु strange (आश्चर्यजनक) है कि रामबाबू इसी साधन के लिए उलाहना देते हैं। रामबाबू कहते हैं, 'उनके दर्शन कर लिए अब फिर और साधन क्या?'

मास्टर— जिसका जैसा विश्वास, वह जो चाहे करे।

नरेन्द्र— हम लोगों को तो वे साधना करने के लिए कह गए हैं।

नरेन्द्र ठाकुर के प्यार की बातें फिर और बता रहे हैं।

नरेन्द्र— मेरे लिए माँ के निकट कितनी बातें कही हैं! जब खाने को नहीं मिलता था— बाबा की मृत्यु हो गई थी— घर में खूब कष्ट था— तब मेरे लिए माँ से रुपयों की प्रार्थना की थी।

मास्टर— वह जानता हूँ, तुम से सुना था।

नरेन्द्र— रुपया नहीं हुआ। वे बोले, माँ कहती है— मोटा भात, मोटा कपड़ा हो सकता है। भात-दाल हो सकता है।

''इतना मेरे लिए प्यार— किन्तु जब कोई अपवित्र भाव आया, तुरन्त जान गए! अन्नदा के संग में जब घूमता था, असत् व्यक्तियों के संग में तब कभी जा पड़ा था। उनके पास आने पर मेरे हाथ से फिर नहीं खाया, थोड़ा-सा हाथ उठा और नहीं उठता था। उनकी बीमारी के समय उनके मुख तक हाथ उठा और आगे नहीं उठा था। बोले, 'तेरा अभी तक भी नहीं हुआ।'

''एक-एक बार खूब अविश्वास आता। बाबूराम के घर में बोध हुआ, कुछ नहीं है। जैसे— ईश्वर-फीश्वर कुछ भी नहीं है।''

मास्टर— ठाकुर तो कहा करते थे, उनकी भी ऐसी अवस्था एक-एक बार होती थी।

दोनों जन चुप किए हुए हैं। मास्टर कह रहे हैं—
''धन्य तुम लोग! रात-दिन उनका चिन्तन कर रहे हो!''

नरेन्द्र कहते हैं,

''कहाँ? उनको देख नहीं पा रहा हूँ, इस कारण शरीरत्याग करने की इच्छा कहाँ होती है?''

रात्रि हो गई। निरंजन श्री पुरीधाम से कुछ क्षण हुए लौटे हैं। उनको देखकर मठ के भाई और मास्टर सभी आनन्द प्रकाश कर रहे हैं। वे पुरी-यात्रा का विवरण कहने लगे। निरंजन की वयस् अब 25-26 होगी। सन्ध्या-आरती के बाद कोई-कोई ध्यान कर रहे हैं। निरंजन लौटे हैं, इसलिए अनेक ही बड़े घर में (दानवों के घर में) आकर बैठ गए और सदालाप करने लगे। रात 9 बजे के बाद शशी ने श्री ठाकुर जी को भोग दिया और उन्हें शयन करवाया।

मठ के भाई निरंजन को लेकर रात का आहार करने के लिए बैठे। खाने में रोटी, एक सब्जी और थोड़ा गुड़ है, और ठाकुर का यत्किंचित् सूजी की पायस आदि प्रसाद है।

ठाकुरबाड़ी (कथामृत भवन), कलकत्ता—
मास्टर महाशय (श्री म) का कमरा और तख़्तपोश

श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत पीठ, चण्डीगढ़—
पूजा तथा ध्यानकक्ष

श्रीरामकृष्ण साहित्य

श्रीरामकृष्ण आश्रम, त्रिवेन्द्रम के स्वामी विमलानन्द ने कहा था : ''भारत के पिछले एक सौ वर्षों के धार्मिक इतिहास में दो घटनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं—

एक— स्वामी विवेकानन्द का पश्चिम में चार वर्ष का प्रवास और भारत लौटने पर बेलुड़मठ की स्थापना।

आज ठाकुर-कृपा से इसी बेलुड़मठ के तत्त्वावधान में श्रीरामकृष्ण विवेकानन्द नाम से देश-विदेश में सैंकड़ों केन्द्र / आश्रम स्थापित हो चुके हैं, हो रहे हैं जो श्रीरामकृष्ण-विचारधारा का बीज छिड़कने में कार्यरत हैं।

दूसरी— मास्टर महाशय (श्री म) द्वारा 'श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत' का कथन-लेखन-प्रकाशन।

स्वामी विवेकानन्द ने श्रीरामकृष्ण-विचारधारा के बीज छिड़कने का कार्य किया तो श्रम म ने कथामृत के कथन-लेखन-प्रकाशन द्वारा उन बीजों को सुरक्षित रखने का महान् कार्य किया। श्री म द्वारा एक ओर कथामृत-लेखन-कार्य चला तो दूसरी ओर उनके पास आने वाले जिज्ञासु भक्तों के सम्मुख कथामृत-कथन, कथामृत-वर्षण होता रहा। ठाकुर के संग रहते-रहते और ठाकुर-वाणी का स्वयं पालन करते-करते श्री म का तो जीवन ही हो गया था ठाकुरमय! वे ठाकुरवाणी के अनुसार अपने ही घर में बड़े घर की दासीवत् असंग भाव से रहते और अन्त तक इसी भाव में रहे। ठाकुर-वाणी के कथन-वर्षण के साथ-साथ श्री म के अपने इस आचरण ने उनके अनेक गृही तथा संन्यासी भक्तों को प्रभावित किया।

श्री म की सेवक सन्तान जगबन्धु महाराज (स्वामी नित्यात्मानन्द) को दीर्घकाल तक अपने सद्‌गुरु श्री म के साथ रहने का,

उनके मुख से ठाकुर-वाणी सुनने का, ठाकुर-वाणी के अनुकूल उन्हें जीवन-यापन करते देखने का सुयोग मिला। जिस तरह श्री म ठाकुर की वाणी को, उनके प्रतिदिन के क्रिया-कलापों को नित्यप्रति अपनी दैनन्दिनी (डायरी) में संजोया करते थे, उसी प्रकार स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज भी श्री म के मुख से नि:सृत ठाकुर-वाणी को, श्री म के क्रिया-कलापों को अपनी डायरी में नित्यप्रति लिखा करते। जिस तरह ठाकुर श्री म से अपनी बताई बातें सुनते और स्थान विशेष पर उन का संशोधन करते, उसी तरह श्री म ने भी जगबन्धु महाराज से उनकी डायरी अनेक बार सुनी और जहाँ कहीं आवश्यक हुआ, उसमें संशोधन कर दिया। जिस तरह ठाकुर के देहत्याग के पश्चात् श्री म ने ठाकुरबाड़ी (कथामृत भवन), कलकत्ता से 'कथामृत' के रूप में ठाकुर-वाणी का प्रकाश किया, उसी तरह स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज ने भी अपनी शिष्या श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता को निमित्त बनाकर श्री म ट्रस्ट की स्थापना की और ट्रस्ट के अधीन कथामृत पीठ, चण्डीगढ़ से 'श्री म दर्शन' के रूप में श्री म के मुख से नि:सृत ठाकुर-वाणी का, ठाकुर वाणी के अनुसार जी रहे श्री म के क्रिया-कलापों का प्रचार-प्रसार और प्रकाश किया।

'श्रीरामकृष्ण श्री म प्रकाशन' नाम से बंगला 'श्री म दर्शन' का प्रकाशन-कार्य सन् 1960 से भी पहले से शुरु हो गया था। सन् 1967 में इस प्रकाशन-संस्था को स्वामी जी महाराज ने ट्रस्ट का रूप दिया और सन् 1977 में ट्रस्ट ने कथामृत पीठ का निर्माण कराया। श्रीरामकृष्ण-कथा के प्रचार-प्रसार का यह कार्य अब इसी कथामृत पीठ के तत्त्वावधान में श्रीमती गुप्ता के निवास स्थान 579, सैक्टर 18-बी, चण्डीगढ़ से हो रहा है। सन् 1975 में स्वामी नित्यात्मानन्द जी के देहत्याग के पश्चात् उन्हीं की शिष्या श्रीमती गुप्ता, श्री म ट्रस्ट की अध्यक्षा बनीं। वे सन् 1958 में माँ शारदा के जन्मोत्सव पर स्वामी नित्यात्मानन्द जी के सम्पर्क में आई थीं। सन् 1975 तक स्वामी जी के सानिध्य में रहकर श्रीमती गुप्ता ने श्रीरामकृष्ण श्री म साहित्य का न केवल मूल बंगला से हिन्दी में यथावत् अनुवाद-कार्य ही किया अपितु इस समस्त साहित्य का आजीवन प्रकाश, प्रसार और प्रचार करते हुए, ठाकुर-वाणी के ही अनुकूल जीवन जीते हुए वे 26 मई, 2002 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन ठाकुर-गोद में समा गईं।

❖

श्री 'म' ट्रस्ट के प्रकाशन

1. श्री म दर्शन

बंगला संस्करण— भाग 1 से 16— स्वामी नित्यात्मानन्द

श्री म दर्शन महाकाव्य में ठाकुर, माँ सारदा, स्वामी विवेकानन्द तथा अन्यान्य संन्यासी एवं गृही भक्तों के विषय में नूतन वार्ताएँ हैं। और इसमें है कथामृतकार श्री 'म' द्वारा 'कथामृत' के भाष्य के साथ-साथ उपनिषद्, गीता, चण्डी, पुराण, तन्त्र, बाईबल, कुरान आदि की अभिनव सरल व्याख्या।

2. श्री म दर्शन

हिन्दी संस्करण— भाग 1 से 16

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता द्वारा बंगला से यथावत् हिन्दी-अनुवाद।

3. श्री म दर्शन

अंग्रेज़ी संस्करण— ('M'— The Apostle and the Evangelist)

श्री 'म' दर्शन ग्रन्थमाला का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता ने 'M'— The Apostle and the Evangelist नाम से किया है। ट्रस्ट के पास प्रथम ग्यारह भाग तो उपलब्ध भी हैं। शेष पाँच भाग अभी मुद्रण-प्रकाशन-प्रक्रिया में हैं।

4. Sri Sri Ramakrishna Kathamrita Centenary Memorial

प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता और पद्मश्री डी०के० सेनगुप्ता द्वारा अंग्रेज़ी में सम्पादित वृहद् ग्रन्थ, जिसमें ठाकुर श्रीरामकृष्ण, 'कथामृत', श्री 'म' और 'श्री म दर्शन' पर श्रीरामकृष्ण मिशन के संन्यासियों समेत अनेक गणमान्य विद्वानों के शोधपूर्ण लेख हैं।

5. A Short Life of Sri 'M'

स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज के मन्त्र-शिष्य और श्री म ट्रस्ट के फाऊँडर सैक्रेट्री प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा अंग्रेज़ी में लिखी गई श्री म की संक्षिप्त जीवनी।

6. **Life of M. and Sri Sri Ramakrishna Kathamrita**

प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा लिखित श्री म के जीवन तथा 'कथामृत' पर शोध प्रबन्ध

7. **श्री श्री रामकृष्ण कथामृत**

हिन्दी संस्करण— भाग 1 से 5

श्री महेन्द्रनाथ गुप्त ने ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के श्रीमुख-कथित चरितामृत को अवलम्बन करके ठाकुरबाड़ी (कथामृत भवन), कोलकता-700 006 से 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' का (बंगला में) पाँच भागों में प्रणयन एवं प्रकाशन किया था।

इनका बंगला से यथावत् हिन्दी अनुवाद करने में श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता ने भाषा-भाव-शैली— सभी को ऐसे सरल और सहज रूप में संजोया है कि अनुवाद होते हुए भी यह ग्रन्थमाला मूल बंगला का रसास्वादन कराती है।

8. **Sri Sri Ramakrishna Kathamrit**

English Edition

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता के हिन्दी-अनुवाद से प्रोफेसर धर्मपाल गुप्ता द्वारा कथामृत का अंग्रेज़ी-अनुवाद।

9. **नूपुर**

वार्षिक स्मारिका

श्री म ट्रस्ट के संस्थापक और हम सब के पूजनीय गुरु महाराज स्वामी नित्यात्मानन्द जी के 101वें जन्मदिन पर उनकी स्मृति में 'नूपुर' नाम से सन् 1994 ईसवी में एक स्मारिका का प्रकाशन हुआ था। उसी स्मारिका ने अब वार्षिक पत्रिका का रूप ले लिया है, जिसमें

अन्य बातों के अतिरिक्त ठाकुर रामकृष्ण परमहंस, माँ सारदा, श्री म, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी नित्यात्मानन्द, 'श्री म दर्शन' आदि के बारे में प्रचुर सामग्री रहती हैं। साथ ही कथामृतकार श्री म के द्वारा 'श्री म दर्शन' में कही उन बातों को भी प्रकाश में लाया जाता है, जो 'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' में नहीं हैं। ❖